**श्री श्री रूद्रयज्ञ एवं महाशिवरात्रि पूजा के उद्घाटन कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप**

| | | |
|---|---|---|
| **दिनांक 5 मार्च 2024, मंगलवार** | **समय : 6.00 PM** | **स्थान : शिलपुखरी, गुवाहाटी** |

ॐ नमः शिवाय।"

आज इस पावन भूमि पर हमारे सामने विराजमान

- परम पूज्य शंकराचार्य गोवर्धनपीठ स्वामी श्री अधोक्षजानंद जी महाराज,
- परम पूज्य शंकराचार्य भानपुरापीठ स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज,
- माननीय केंद्रीय मंत्री श्री सर्वानंद सोनोवाल जी,
- यज्ञ कमेटी के मुख्य सलाहकार डॉ. अरूप कुमार मिश्र जी,
- अध्यक्ष श्री बिजन महाजन जी,
- गणमान्य अतिथियों,
- मीडिया के मेरे मित्रों,
- एवं उपस्थित देवियों और सज्जनों !

सबसे पहले, आप सभी को **"रुद्र यज्ञ और महाशिवरात्रि"** के पावन पर्व पर हार्दिक बधाई एवं अनेकानेक शुभकामनाएँ।

हमारा देश भारत आस्था और आध्यात्मिकता का देश है। शायद ही किसी अन्य देश में इतने विविध त्योहार और उत्सव मनाए जाते होंगे। विश्वास और आध्यात्मिकता से भारत को दृढ़ निश्चय और संकल्प शक्ति मिलती है।

आदियोगी के सान्निध्य में, महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर यहां आकर मैं खुद को धन्य महसूस कर रहा हूं। इस धार्मिक कार्यक्रम में बुलाने के लिए मैं कमेटी का आभारी हूँ। मुझे यह जानकर और अधिक प्रसन्नता हुई कि यहां विगत 27 वर्षों से महाशिवरात्रि का आयोजन हर वर्ष किया जा रहा है, जो अपने आप में महत्वपूर्ण है।

हम भगवान शिव को "पिता" - "शिव बाबा" कहते हैं। लेकिन उनका अर्ध-नारीश्वर रूप भी है। अर्थात् आधे पुरुष और आधे स्त्री का रूप वे धारण करते हैं। यह रूप हर इंसान के पुरुष और स्त्री पक्ष को दर्शाता है और दोनों में समानता हो यह भी बतलाता है।

कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि भगवान शिव हमारी समग्र धार्मिक भावनाओं और आध्यात्मिक सोच के मूल में हैं। आप परम प्राप्ति और मुक्ति के विभिन्न मार्गों पर जरा विचार करें जिन्हें मुक्ति, मोक्ष या निर्वाण भी कहते हैं। विश्व की विभिन्न परंपराएं प्रेम या भक्ति मार्ग, ज्ञान मार्ग, योग मार्ग आदि की ओर ले जाती हैं। और इन सभी पथों का एकमात्र मार्गदर्शक भगवान शिव को माना जाता है।

कोई साधक अपने पसंदीदा भगवान का भक्त हो या एक ज्ञानी जो निरपेक्ष की तलाश कर रहा हो या एक योगी जो आध्यात्मिक मिलन के लिए प्रयास कर रहा हो- भगवान शिव की शरण में जाने से निश्चित रूप से लक्ष्य की ओर बढ़ता है।

इसी तरह, भगवान शिव सभी के लिए देवता हैं, क्योंकि उनके विभिन्न रूप हैं जो हमसे मेल खाते हैं। वह एक गृहस्थ हैं, हम अधिकांश की तरह उनका परिवार है। लेकिन वह एक संन्यासी भी हैं जो सब कुछ त्याग कर श्मशान या ऊंचे पहाड़ों पर निवास करते हैं। वह पहले योगी, आदियोगी हैं, और वे पहले ज्ञानी भी हैं।

भगवान शिव, अपने नाम के अनुरूप उदार देव हैं, लेकिन फिर भी अनगिनत मिथकों में उन्हें अति रौद्र देवता के रूप में भी वर्णित किया गया है, जो उनके एक अन्य नाम 'रुद्र' से पता चलता है। शायद इसीलिए भगवान राम और रावण दोनों उनकी आराधना करते थे। इस तरह वह रचनात्मक और विध्वंशक दोनों प्रकार की ऊर्जाओं का प्रतीक हैं। वास्तव में वह विरोधाभासों से परे हैं, क्योंकि वे विध्वंश के साथ सृजन भी करते हैं, जिससे ब्रह्मांड की पुन: उत्पत्ति और कायाकल्प होता है।

आदि शंकराचार्य चाहते थे कि हम सभी अपने भीतर शाश्वत शिव को जानें और अनुभव करें। वे अपने मधुर निर्वाण शतकम में कहते हैं :

**न मे मृत्युशंका न मे जातिभेद:,**
**पिता नैव मे नैव माता न जन्म:।**
**न बन्धुर्न मित्रम् गुरूर्नैव शिष्य:,**
**चिदानन्दरूप: शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥**

अर्थात् :

"मुझे न मृत्यु का डर है, न जाति या धर्म का, मेरे न तो पिता हैं और न ही माँ, क्योंकि मैं कभी पैदा ही नहीं हुआ, मैं न रिश्तेदार हूं, न मित्र, न शिक्षक, न विद्यार्थी, मैं चेतना और आनंद का स्वरूप हूं, मैं सनातन शिव हूं।"

नास्तिकों को यह विश्वास और मिथक की तरह लग सकता है। हालाँकि, यह सुखद आश्चर्य है कि आधुनिक विज्ञान ने भी शिव के कुछ रहस्यों को उजागर करना शुरू किया है।

20वीं शताब्दी के आरंभ में, जब भौतिकी ने नए आविष्कार किए और वैज्ञानिकों ने Sub-Atomic Particles के हिलने की छवियां बनाईं, तो पारंपरिक मूर्तियों में दिखाए गए नृत्यमग्न शिव या नटराज के नृत्य-कदम के समान ट्रेसिंग लाइनें पाई गई।

मैं जो कह रहा हूं वह निश्चित रूप से एक सर्वज्ञ सिद्धांत है। इससे पता चलता है कि प्राचीन संतों ने अपने गहरे ध्यान में ब्रह्मांड की वास्तविकता को अनुभव किया और फिर अपनी भाषा और प्रतीकों में अभिव्यक्त किया। भगवान शिव उस निरपेक्ष के ही प्रतीक हैं।

इसलिए कई विद्वान नास्तिक भी भगवान शिव से हैरान होते हैं। पक्के समाजवादी राममनोहर लोहिया अज्ञेयवादी भी थे, लेकिन भगवान शिव कहे जाने वाले इस परम तत्व को वे भली-भांति समझते थे। उन्होंने 1956 में **'राम और कृष्ण तथा शिव'** नामक एक निबंध में लिखा था, जिसे मैं यहाँ उद्धृत कर रहा हूं

**"जबकि राम और कृष्ण ने मानव स्वरूप में रहे, लेकिन शिव का न जन्म हुआ और न ही मृत्यु हुई। परमात्मा की तरह वह अनंत हैं, लेकिन परमात्मा से हटके, उनके जीवन में समय और कई स्थलों की ऐसी घटनाएं भी हैं, जिससे वे तुलना में परमात्मा स्वरूप से भिन्न प्रतीत होते हैं। वह शायद मनुष्य को ज्ञात एकमात्र गैर-आयामी मिथक या अवधारणा वाले हैं। निश्चित रूप से कोई अन्य इस संबंध में उनके बराबर नहीं है।"**

देवियों और सज्जनों,

आज से यहां तीन दिवसीय महाशिवरात्रि का पर्व शुरू हो रहा है, जो भारत के अधिकांश हिस्सों में सर्दियों की समाप्ति और गर्मी के आगमन पर आता है।

महाशिवरात्रि, इस प्रकार अज्ञानता के अंधकार के अंत और ज्ञान का मार्ग खोलने की भी प्रतीक है। जीवन के उच्च आदर्शों की तलाश करने वालों के लिए महाशिवरात्रि विशेष रूप से महत्व रखती है।

आज हमें यहां शंकराचार्य महाप्रभु महाराज का भी सान्निध्य प्राप्त है, जिन्होंने हमारे आदिकालीन गुरुओं की शिक्षाओं का प्रचार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। देशभर के अनगिनत लोगों, विशेषकर युवाओं ने उनसे आध्यात्मिक प्रगति करने की प्रेरणा पाई है। सद्गुरु महाराज जी हमें अपनी कथनी और कार्यों के माध्यम से हमारी सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में भी हमें शिक्षा देते हैं।

आज, विश्व पहले से अधिक संघर्षों में बंटा तो हुआ ही है साथ ही यह एक अभूतपूर्व पारिस्थितिक संकट का भी सामना कर रहा है। प्रकृति माता और उसके सभी बच्चों के साथ सामंजस्य बनाते हुए एक संतुलित और करुणापूर्ण जीवन की पहले कभी इतनी आवश्यकता अनुभव नहीं की गई थी जितनी आज की जा रही है।

यह महाशिवरात्रि हमारे अंदर के अंधकार को दूर करे और हम सभी को अधिक पूर्ण और समृद्ध जीवन की ओर ले जाए। मैं, इस पथ पर आपकी सुखद यात्रा की कामना करता हूं, कहा भी जाता है :

**शिवास्तेपन्थान:सन्तु।**

महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक प्रकाश प्रतिदिन हमारे पथों को प्रकाशित करे।

आप सभी को एक बार पुन: महाशिवरात्रि के पावन पर्व की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। महादेव सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि प्रदान करें ऐसी कामना करता हूं।

धन्यवाद !

जय हिन्द !